www.research-Chronicler.com ISSN - 2347 - 503X

Research Chronicler

International Multidisciplinary Research Journal

Vol III Issue VII : Sept. 2015

Editor-In-Chief

Prof. K. N. Shelke

Research Chronicler

ISSN 2347 – 5021 (Print); 2347 – 503X (Online)

A Peer-Reviewed Refereed and Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Volume III Issue VII: September – 2015

Editor-In-Chief

Prof. K.N. Shelke

Head, Department of English,
Barns College of Arts, Science and Commerce, New Panvel, India

Editorial Board

Dr. A.P. Pandey, Mumbai, India
Dr. Patricia Castelli, Southfield, USA
Dr. S.D. Sargar, Navi Mumbai, India
Christina Alegria, Long Beach, USA
Prin. H.V. Jadhav, Navi Mumbai, India
Dr. Adrianne Santina, McMinnville, USA
Prof. C.V. Borle, Mumbai, India
Dr. Nirbhay Mishra, Mathura, India

Advisory Board

Dr. S.T. Gadade

Principal, C.K. Thakur College,
New Panvel, India

Dr. R.M. Badode

Professor & Head,
Department of English,
University of Mumbai, India

Dr. G.T. Sangale

Principal, Veer Wajekar College,
Phunde, India

Research Chronicler is peer-reviewed refereed and indexed multidisciplinary international research journal. It is published bi-monthly in both online and print form. The Research Chronicler aims to provide a much-needed forum to the researchers who believe that research can transform the world in positive manner and make it habitable to all irrespective of their social, national, cultural, religious or racial background.

With this aim Research Chronicler, Multidisciplinary International Research Journal (RCMIRJ) welcomes research articles from the areas like Literatures in English, Hindi and Marathi, literary translations in English from different languages of the world, arts, education, social sciences, cultural studies, pure and applied Sciences, and trade and commerce. The space will also be provided for book reviews, interviews, commentaries, poems and short fiction.

-:Subscription:-

	Indian Individual / Institution	Foreign Individual / Institution
Single Copy	₹ 600	$40
Annual	₹ 3000	$200
Three Years	₹ 8000	$550

-:Contact:-

Prof. K.N. Shelke

Flat No. 01,
Nirman Sagar Coop. Housing Society,
Thana Naka, Panvel, Navi Mumbai. (MS), India. 410206.knshelke@yahoo.in

Cell: +91-7588058508

Research Chronicler

A Peer-Reviewed Refereed and Indexed International Multidisciplinary Research Journal

Volume III Issue VII: September – 2015

CONTENTS

Sr. No.	Author	Title of the Paper	Page No.
1	Prof. Mahmoud Qudah	The Role of L2 Proficiency in the Word Association Behavior of Jordanian EFL Learners	**1**
2	Dr. Archana Durgesh Ms. Ekta Sawhney	Love Conquers All: *Train to Pakistan*	**12**
3	Mr. Chaitanya Mahamuni Dr. KTV Reddy Ms. Nishan Patnaik	Study of Meta-Materials as an Emerging Technology in Microwave and Millimeterwave Wireless Communication	**20**
4	Dr. Archana Durgesh Ms. Shobhna Singh	A Tribute to Khushwant Singh's *Love*: *Delhi*	**26**
5	Mrs. Deepti Mujumdar Ms. Shaguftaa Seher Rehmaan	Treatment of Women Characters in Vijay Tendulkar's *Encounter in Umbugland* and *Kamala*	**31**
6	Mr. Chaitanya Mahamuni Dr. KTV Reddy Ms. Nishan Patnaik	Energy Efficient Performance in Wireless Sensor Networks: A Literature Survey	**39**
7	Dr. Rupal S. Patel	*Death in Venice*: A Modernist Work of Art	**45**
8	Dr. Archana Durgesh Dr. Pooja Singh	Is There Honor In Honor Killings? An insight	**53**
9	Smriti Chowdhuri	Kamala Das in Search of her Grandmother's Land: An Eco-Feminist Study of Kamala Das's Poetry	**59**

10	Dr. Archana Durgesh, Dr. Pooja Singh & Nigar Alam	Sex as an Elemental Passion in '*The Company of Women'*	**64**
11	Shomik Saha Kalpak De	Tourism Potential in Dooars Region: An analysis and the way ahead	**70**
12	सुधीर कुमार डॉ0 स्नेहलता शिवहरे	अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा शिक्षा	**77**
	Short Stories		
13	Relations	Dr. Archana Durgesh	**84**
14	A Mother's Promise	Dr. Archana Durgesh	**86**
	Poems		
15	Dr. Archana Durgesh	Prayers for My Dear One	**90**
16	Dr. Archana Durgesh	ME & YOU	**90**

RESEARCH CHRONICLER

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा शिक्षा

सुधीर कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा संकाय) महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, (उ०प्र०) भारत

डॉ0 स्नेहलता शिवहरे

पी–एच0डी0 (समाजशास्त्र), सी० एस० जे० एम० यू० कानपुर (उ०प्र०) जे0 आर0 एफ0 (शिक्षाशास्त्र) भारत

सारांश

विश्व को यदि सुन्दर व सुखमय जीवन जीने के योग्य बनाना है तो इसे युद्ध की सम्भावनाओं से बचाना होगा। सम्पूर्ण विश्व समाज एक सूत्र में बंधे और प्रत्येक भौगोलिक, देशीय, जातीय, धार्मिक आदि अनेक सीमित मान्यताओं से ऊपर उठ सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति सद्भाव रखे तब ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। आज विश्व शान्ति की आवश्यकता इसलिए भी है कि विश्व समाज आज एक वैश्विक ग्राम में बदलता जा रहा है। आवागमन के साधन संचार सुविधा, आर्थिक अश्रितता, तकनीकी आदान–प्रदान आदि में विभिन्न समाजों को तथा विभिन्न देशों को एक दूसरे के इतने निकट ला दिया है कि कोई भी घटना सम्पूर्ण विश्व को समान रूप से प्रभावित करती है। इन्टरनेट तथा कम्प्यूटर में दुनियाँ को वैश्विक गाँव में बदलने में अहम भूमिका निभायी । विश्व के किसी भी देश में कोई भी संकट आता है तो सम्पूर्ण विश्व इससे प्रभावित होता है अतः सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने और विश्व बन्धुत्व की मान्यता को आगे बढ़ाने व अंगीकार करने के ध्येय से हमें व्यवहार करना चाहिए । इस प्रकार का व्यवहार भारतीय दर्शन का आधार रहा है। सभी मानव चाहे वे किसी देश में हों जाति में हों, धर्म में हों सभी एक हैं, समान हैं।किन्तु आज विश्व समाज में जो कठोर व सीमित राष्ट्रीयता का वर्चस्व स्थापित हो रहा है यह समाज व व्यक्तियों को अलग – अलग सीमाओं में बाँट देता है । प्रस्तुत शोध पत्र में इन्ही तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को वड़ाने में शिक्षा की भूमिका क्या होगी । शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा का पाठ्यक्रम, अनुशासन, विद्यार्थी तथा शिक्षक की भूमिका, शिक्षण विधि, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन आदि का निर्धारण किस प्रकार से किया जाये कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास हो ।

कुन्जी शब्द – अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, पाठ्य सहगामी क्रियायें, पाठ्यक्रम, अनुशासन, विद्यार्थी, शिक्षक, यूनेस्को आदि ।

प्रस्तावना (Introduction) – विश्व युद्धों के उपरान्त जो हानि हुई है उससे यह सोचना पड़ा है कि मानवता को यदि अपने आप को सुरक्षित रखना है तो अनिवार्य रूप से युद्ध के संकट से बचना होगा। विश्व को यदि सुन्दर व सुखमय जीवन जीने के योग्य बनाना है तो इसे युद्ध की सम्भावनाओं से बचाना होगा। सम्पूर्ण विश्व समाज एक सूत्र में बंधे और प्रत्येक भौगोलिक, देशीय, जातीय, धार्मिक आदि अनेक सीमित मान्यताओं से ऊपर उठ सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति सद्भाव रखे तब ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। आज विश्व शान्ति की आवश्यकता इसलिए भी है कि विश्व समाज आज एक वैश्विक ग्राम में बदलता जा रहा है। आवागमन के साधन संचार सुविधा, आर्थिक अश्रितता, तकनीकी आदान–प्रदान आदि में विभिन्न समाजों को तथा विभिन्न देशों को एक दूसरे के इतने निकट ला दिया है कि कोई भी घटना सम्पूर्ण विश्व को समान रूप से प्रभावित करती है। इन्टरनेट तथा कम्प्यूटर में दुनियाँ को वैश्विक गाँव में बदलने में अहम भूमिका निभायी । विश्व के किसी भी देश में कोई भी संकट आता है तो सम्पूर्ण विश्व इससे प्रभावित होता है जैसे अभी हाल ही में नेपाल में आया भीषण भूकम्प जिसमें अपार जनहानि

तथा आर्थिक नुकसान हुआ। इस ह्रदय विदारक घटना ने सम्पूर्ण विश्व के लोगों पर प्रभाव डाला तथा अपनी समर्थ्य के अनुसार सहायता की। इसी प्रकार अभी जुलाई 2015 में उत्पन्न हुआ ग्रीस का आर्थिक संकट।जिसने यूरोप सहित सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया तथा इससे समाधान हेतु यूरोप ने कुछ ठोस कदम उठाये।

भारतीय चिन्तन न हमेशा ही सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है। सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने और विश्व बन्धुत्व की मान्यता को आगे बढ़ाने व अंगीकार करने का ध्येय सदा से ही भारतीय दर्शन का आधार रहा है। सभी मानव चाहे वे किसी देश में हों जाति में हों, धर्म में हों सभी एक हैं, समान हैं।किन्तु आज विश्व समाज में जो कठोर व सीमित राष्ट्रीयता का वर्चस्व स्थापित हो रहा है यह समाज व व्यक्तियों का अलग – अलग सीमाओं में बाँट देता है व्यक्ति राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठ अन्तर्राष्टीय हितों से जुड़े यह अन्तर्राष्टीयता की पहली शर्त है

अन्तर्राष्ट्रीयता की संकल्पना (Concept of Internationalism) – अन्तर्राष्टीयता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जेरमी बेन्थम ने किया। उसने राष्ट्रों के बीच मतभेदों और झगड़ों को निपटाने के लिए विश्व न्यायालय की संकल्पना का प्रतिपादन किया ताकि सार्वभौमिक रूप से मतभेदों और झगड़ों को सुलझाया जा सके। कामेनियस ने अन्तर्राष्ट्रीयता की अवधारणा को आगे बढ़ाया । उन्होंने यह माना कि विश्व के सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षित होना चाहिए। उसने बताया कि सभी को शिक्षा की आवश्यकता है क्योंकि इससे सम्पूर्ण विश्व में न्याय व शॉन्ति की स्थापना की जा सकती है। विश्व शन्ति के अपने लक्ष्य की प्रप्ति के लिए उसने विश्व सरकार की स्थापना को आवश्यक माना। अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में इन लेखको ने प्रारम्भिक कार्य किया । रूसो ने इस बात पर बल दिया कि प्राथमिक नियमों का पालन सभी व्यक्तियों के लिए आवश्यक है। कान्ट ने बल दिया कि दुनियाँ में सभी देशों का एक संघ होना चाहिए इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीयता को विज्ञान तथा तकनीक द्वारा अत्यधिक बल मिला। विज्ञान तथा तकनीक की खोजों के आदान–प्रदान द्वारा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ । उन्नीसवी शताब्दी के मध्य में चर्ल्स डार्विन की प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरीजन ऑफ स्पीसीज' का प्रकाशन हुआ। जिसमें उन्होंने बताया कि मनुष्य 'एप्स' जाति के बन्दर से विकसित हुआ। इस आधार पर सभी मनुष्य चाहे काले हों या गोरे सभी का उद्गम एक सा है। चूंकि सभी लोगों का एक सा ही आरंभिक इतिहास है, एक ही वंश परम्परा से उद्भव हुआ है अतः सभी लोग एक सी क्षमता तथा सम्भावनायें रखते हैं। डार्विन ने राष्ट्रीय व धार्मिक मान्यताओं को तोड़कर व्यक्तियों को सीमित दायरे से उठाकर व्यापक ढ़ग से वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सोचने के लिए प्रेरित किया यह सोचना ही अन्तर्राष्ट्रीयता का आधार बना। इसी प्रकार कार्ल मार्क्स ने सम्पूर्ण विश्व के सर्वहारा वर्ग को संगठित होने का नारा दिया। जिससे अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के आगे बढ़ाने में योग दिया।

भारत में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना अत्यन्त प्राचीन है वेदों में यह संकल्पना बहुत पहले प्रस्तुत कर दी गई थी।''वसुधैव कुटुम्बकम'' सारा विश्व परिवार है, ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' सारा विश्व सुखमय हो, आदि सूत्र भारतीय दृष्टिकोंण व चिन्तन को स्पष्ट करते हैं। अतः अन्तराष्ट्रीयता के लिए आवश्यक है कि व्यक्तियों में उदारता संवेदनशीलता और सहयोग की भावना विकसित हो, और वे अपनी अपनी चारित्रिकताओं को अनेकता में एकता के रूप को स्वीकार करें।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की संकल्पना (Concept of International Understading)– अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना से तात्पर्य विश्वबन्धुत्व, या वैश्विक भाई–चारे से है। इसी भावना ने 'लीग ऑफ नेशन्स'' की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । अन्तर्राष्ट्रीयता एक भावना है जो व्यक्ति को

बताती है कि वे अपने राज्य के ही सदस्य नही, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के भी नागरिक है। अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के लिए अब जो सोच विकसित हुई वह यह है कि विश्व में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जाये, जिससे राष्ट्रों के बीच सम्बन्धों का निर्माण और युद्धों पर रोक शक्ति द्वारा न लगाकर आपसी आदान–प्रदान और वार्तालाप, सौहाद्रता तथा समझ के द्वारा स्थापित हो। विश्व समाज में अब जो युद्ध छेड़ना है वह है अज्ञानता के विरूद्ध, गरीबी के विरूद्ध, अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध, भूख और अकाल के विरूद्ध, बीमारी और महामारी के विरूद्ध, जिससे मानव का कल्याण हो। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव से जो अर्थ अभिव्यक्त होता है वह है कि विश्व समाज के सभी व्यक्तियों का स्वेच्छा से निर्णय लेना कि वे सब शन्तिपूर्ण ढ़ंग से आपसी समझ व सद्भाव से साथ साथ रहेंगे और बिना किसी बल प्रयोग के बन्धुत्व के लक्ष्य की प्रप्ति हेतु आपसी समझ के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के दो मुख्य घटक है –

1. सभी व्यक्तियों में यह इच्छा और अभिलाषा उत्पन्न करना कि वे एक ऐसे विश्व समाज में रहते है जहाँ सब को न्याय बिना किसी जाति, जन्म, राष्ट्रीयता, वर्ग, प्रजाति, स्तर, धर्म और रंग की मान्यताओं के आधार पर प्राप्त है।
2. समाज हितों और आपसी समझ द्वारा स्थापित लक्ष्यों की प्रप्ति हेतु सम्मिलित प्रयासों की ओर प्रत्येक को तत्पर और प्रेरित करना है। इसके लिए आवश्यक है कि उनमें सहकारिक नियोजन और रचात्मक कार्यों की ओर स्वाभाविक झुकाव हो।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव की अवधारणा मुख्य रूप से बौद्धिक और संवेगात्मक है। राजनीतिक प्रयासों द्वारा स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और सहअस्तित्व के प्रयास अैर स्वरूप स्थायी रूप से कारगर नहीं हो सकता है विश्व के अनुभव बताते है कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद किये गये प्रयास अधूरे रह गये। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव की अवधारणा वस्तुतः मनोवैज्ञानिक है। यह बात यूनेस्को ने स्वीकार की है कि युद्ध मनुष्यों के मस्तिष्क में उपजता है तो निश्चय ही शान्ति भी मनुष्य के मस्तिष्क में होनी चाहिए। विश्व शान्ति जो सरकारों की आर्थिक और राजनैतिक अवधारणाओं पर आधारित होती है वह दीर्घ क्रामिक तथा सर्वमान्य नहीं हो सकती और न ही इसकी स्थापना हेतु विश्व के लोगों की ईमानदारी युक्त दीर्घकालिक सहभागिता ही मिल सकती है।

यदि विश्व शान्ति और सहअस्तित्व के प्रयासों को स्थायी बनाना है तो इसे मानवता की बौद्धिकता और नैतिकता पर आधारित करना होगा। अज्ञानता और गलतफहमी व्यक्तियों में डर तथा भ्रम उत्पन्न करती है अतः अज्ञानता को दूर कर और आपसी समझ को उत्पन्न कर अन्तर्राष्ट्रीय सुख और शान्ति का वातवरण बनाया जा सकता है यह दायित्व निर्विवाद रूप से शिक्षा पर आ जाता है

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा शिक्षा (International Understading and Education) – यह सत्य है कि शिक्षा एक ऐसाा घटक है जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव शिक्षा का अभिन्न अंग है शिक्षा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में आवश्यक अभिवृत्ति, रूचि, कौशल, योग्यता और मानसिक निर्माण किया जा सकता है। वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य भी यह है कि वह छात्रों को व्यापक दृष्टिकोंण व व्यवहार में एकरूपता, उदारता और संश्लेषण विकसित कर परिमार्जित करना तथा संवेगों को नियन्त्रित कर सकने की योग्यता का विकास को शिक्षा के व्यापक उद्देश्य में इन सभी योग्यताओं का विकास सम्मिलित है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास के परिप्रेक्ष्य में जब किसी योग्यता, कौशल अथवा गुणों को जब व्यापकता प्रदान की जाती है तब शिक्षा पर कोई अतिरिक्त भार नहीं आता है। शिक्षा के

व्यापक उद्देश्यों में संश्लेषित ये उद्देश्य शिक्षा को व्यापक धरातल भी प्रदान करते है। पढ़ने लिखने और सूचनाओं तथा तथ्यों को विश्लेषित व संश्लेषित करने की योग्यता में राष्ट्र संघ के सम्बन्ध की सूचनाओं को एकत्रित करने, उसके साहित्य को पढ़ाने और अन्तर्राष्ट्रीय हितों के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिकताओं को विकसित कर सकने की योग्यता का विकास भी सही ढ़ग से किया जा सकता है। सामाजिक कुशलता के अर्न्तगत छात्रों को वस्तुनिष्ट ढ़ग से बिना संवेगों को विचलित किये अर्न्तसामजिक, अर्न्तधार्मिक, अर्न्तजातीय, अर्न्तदेशीय समस्या और प्रसंगों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त करने, समायोजन स्थापित करने, सहयोग व सहकारिता हेतु तत्पर करने की योग्यता का विकास किया जा सकता है, जिससे कि वे विदेशी नागरिकों के साथ प्रेमपूर्ण ढ़ंग से व्यवहार कर सकें तथा उनकी सहायता हेतु समस्त मानव समाज की अर्न्तनिर्भरता के तथ्य, सूचनाऐं और सत्यता से परिचित कराते हुए सही निर्णय व पसन्द को चुन सकने के योग्य वनने चाहिए। छात्रों में स्वस्थ अभिवृत्तियों का निर्माण जिससे उनमें सहकारिता, सहभागिता, समायोजन, रूढ़ि व कट्टरता से स्वतन्त्रता तथा मानवीय समस्याओं व कठिनाइयों के प्रति संवेदनशीलता आदि सम्मिलित है। इस प्रकार शिक्षा द्वारा वालकों में विभिन्न प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित किया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा शिक्षा के उद्देश्य (International Understading and Aim of Education) – अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास हेतु विभिन्न उद्देश्यों के निर्धारित किया जा सकता है यथा –

1. **निस्वार्थता** – शिक्षा के द्वारा छात्रों में सामान्य हितों के प्रति स्वीकारोक्ति विकसित करनी चाहिए। स्वयं के तात्कालिक सुख तथा हितों की अपेक्षा अधिकतम सुख तथा हितों को महत्व देने की भावना विकसित करनी चाहिए। निजी हित को सामान्य हितों के लिए समर्पण की भावना विकसित करनी चाहिए।

2. **बौद्धिक समन्वय** – छात्रों में इस प्रकार का बौद्धिक स्तर विकसित करने का प्रयास करना चाहिए जिससे वह आत्म विवेचन, आत्म आलोचना तथा आत्म मंथन की क्षमता विकसित कर सकें। पूर्व धारणाओं तथा अभिमत के शिकार न हों। विपरीत या विरोधी मतों तथा तथ्यों से विचलित हुए बिना बौद्धिक सन्तुलन का परिचय दे सकें।

3. **उदारता व सहिष्णुता का विकास** – आचार –विचार, जाति, धर्म व भाषा के प्रति बालकों में सकारात्मक दृष्टिकोंण विकसित करने का प्रयास करें। इन तथ्यों को क्षेत्रीय व देश के स्तर पर न समझ कर वैश्विक स्तर पर चिन्तन करने का प्रयास करें तथा इनके प्रति उदार बनने का प्रयास करें।

4. **सहकारिता का विकास** – सहकारिता के द्वारा व्यक्ति समायोजन सीखता है और इसमें सम्पूर्ण मानवता के साथ अपने आप को जोड़ने की समझ का विकास होता है।

5. **अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों की महत्ता** –छात्रों में विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता, भाईचारा, आपसी समझ, समानता, मानवता आदि मूल्यों का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए जिससे वालकों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव विकसित हो सके।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा पाठ्यक्रम (International Understading and Curriculum) – कुछ विषय ऐसे है जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास व शिक्षण की अधिक सम्भावनायें हैं यथा इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, साहित्य, समाजशास्त्र आदि। इन विषयों की विषय–वस्तु ऐसी है जो हमें सम्पूर्ण विश्व के मानव समाज को अपनी स्थिति के अनुसार सोचने और समझने के लिये पर्याप्त विषयवस्तु प्रदान करती है। भाषा व साहित्य के द्वारा हम सम्पूर्ण विश्व के साहित्य के बारे में जान सकते हैं तथा इसके द्वारा

भाव–विचारों का आदान प्रदान आसानी से होता है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में सहायता मिलती है। इसी प्रकार इतिहास के द्वारा हम देश की नहीं बल्कि विश्व के इतिहास की जानकारी आसानी से करते है। विश्व में सद्भाव से सम्बन्धित विभिन्न प्रकारणों यथा यूनेस्को, यूनीसेफ, विश्व बैंक, राष्ट्र संघ आदि की वैश्विक स्तर पर विकास में भूमिका के शिक्षण पर बल देकर हम अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास कर सकते हैं। भूगोल शिक्षण द्वारा हम वैश्विक भूगोल पर बल देकर विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, जनसंख्या, आदि द्वारा बच्चों को बता सकते है कि ये संसाधन विश्व में सभी से समान रूप से प्राप्त हों अतः इसके द्वारा विश्व बन्धुत्व पर वल दिया जा सकता है इसी प्रकार अर्थशास्त्र के द्वारा विभिन्न क्रियाओं का प्रभाव विश्व पर समान रूप से पड़ता है यथा मन्दी, महँगाई, बेरोजगारी आदि ने अपना वैश्विक प्रभाव डाला है अतः इन समस्याओं पर हम सभी को मिलकर वैश्विक स्तर पर हल ढूढना ही पड़ेगा। समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र भी वह सामग्री प्रस्तुत करते हैं जिससे छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत की जा सकती है। इन विषयों को पढ़ाते समय पाठ्य पुस्तकों की सीमा से निकलकर छात्रों की क्रियात्मकता, रचनात्मकता, कल्पना का समुचित प्रयोग करते हुए वैश्विक सद्भाव की भावना पैदा की जा सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव तथा शिक्षक (International Understading and Teacher)– अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है शिक्षक पाठ्य सामग्री के प्रसार क्षेत्र को बड़ाते हुए उसे अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य तक ले जा सकता है। यह आवश्यक है कि शिक्षक में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव में आस्था तथा विश्वास हो। विभिन्न घटनाओं को समझ सके तथा विवेचना कर सके। शिक्षक को संकीर्ण मानसिकता का नही होना चाहिए। शिक्षकों को अपनी कल्पना, संकल्प शक्ति, व्यवसायिक नैतिकता, सूझ, नवाचार आदि का प्रयोग करना चाहिए जिससे छात्रों में रूचि, क्रियाशीलता तथा तथ्यों को वैश्विक सन्दर्भ में समझने की शक्ति प्राप्त हो सके ।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव तथा शिक्षण विधि (International Understading and Teaching Method)– अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास हेतु नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर विभिन्न प्रोजेक्ट बच्चों से तैयार कराने चाहिए। यूनेस्को, विश्व बैंक, राष्ट्रसंघ जैसी वैश्विक संस्थाओं को नाटक विधि द्वारा पढ़ाने से बालकों में अन्तर्राष्ट्रीय भावना का गहरा प्रभाव पड़ता है उच्च स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न देशों के शैक्षिक भ्रमण का अवसर प्रदान करना चाहिए तथा वहाँ की संस्कृति तथा मूल्यों के अध्ययन का अवसर प्रदान करने से बालकों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास सम्भव होता है। इसी प्रकार उच्च स्तर पर विभिन्न देशों में शोध द्वारा भी इस प्रवृत्ति का विकास सम्भव होता है। विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की तकनीकी संस्थाओं, उद्योग, कारखानों, राजनैतिक संस्थाओं के अध्ययन पर जोर देना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव तथा विद्यार्थी (International Understading and Student) – अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास के लिए आवश्यक है कि बालकों की सोच स्पष्ट हो तथा पूर्वाग्रहों से ग्रसित न हो जिससे बालक किसी विषय पर बिना पूर्वग्रहों और पक्षपात रहित ढ़गं से चिन्तन कर सके। उसमें तर्कयुक्त व वस्तुनिष्ठ ढ़गं से चिन्तन करने की क्षमता हो तथ्य व साक्ष्यों के आधार पर स्वतन्त्र रूप से व संतुलित ढंग से निष्कर्ष तक पहुँच सकें। पत्र–पत्रिकाओं व जन प्रसारण के माध्यमों द्वारा प्रचारित मतों व सूचनाओं के सम्बन्ध में वे अपना सन्तुलित मत बना सकें स्व अध्ययन और सन्दर्भ ग्रन्थों को पढ़ने की रूचि हो जिससे सही व वैध निष्कर्ष पर पहुँच सकें। तथ्यों व सूचनाओं को अधिक से अधिक जानने के लिए वे पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों को

खोजें और कक्षा में बताये ज्ञान को परिपक्व करने के लिए इन श्रोतों को आधार बनायें। बालक को इस प्रकार से प्रशिक्षित व शिक्षित किया जाये जिससे वह विभिन्न देशों की सभ्यता व संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्पराओं से आसनी से आत्मसात कर सके।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव तथा पाठ्य सहगामी क्रियाऐं(International Understading and Cocariculur Avtivities) – अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास की सम्भावना पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अधिक रहती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इन क्रियाकलपों में छात्र की सहभागिता स्वेच्छा पर निर्भर होती है उनकी रचनात्मकता, कल्पना रूचि व चिन्तन को अभिव्यक्ति का माध्यम मिलता है साथ ही यह क्रियायें स्वाभाविक वातावरण प्रदान करती हैं जहाँ छात्रों की प्रेरणा के पर्याप्त अवसर मिलते हैं।

विद्यालय प्रार्थना, क्लव, भ्रमण, पर्यटन व प्रदर्शन आदि छात्रों में स्वस्थ समझ लाने में सहायक होते हैं। खेल–खूद और अनेक तरह की सांस्कृति व साहित्यिक प्रतिस्पर्धाएं बालकों में स्वस्थ स्पर्धा का विकास करती है और साथ ही साथ एक दूसरे की अच्छाइयों को जानने तथा अपनाने के लिए अवसर भी प्रदान करती है। विभिन्न समुदायों के निकट आने के अवसर मिलते हैं जिससे इनके प्रति रूचि व समझ जागृत होती है तथा सहकारिता व सहयोग की सम्भावना जागृत होती है। विद्यालय में साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अर्न्तगत राष्ट्र संघ दिवस, मानवाधिकार दिवस, साक्षरता दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय बाल दिवस, शान्ति दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस आदि अनेक प्रदर्शनी, निबन्ध लेखन, चित्र संकलन, वाद–विवाद, वेश–भूषा, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा किया जा सकता है। इनमें भाग लेने और इनका आयोजन, संचालन व व्यवस्था करने का दायित्व छात्रों को दिया जाना चाहिए। इन पर्वों व कार्यक्रमों का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। छात्रों को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं और देश– विदेश में होने वाले प्रयासों का ज्ञान इन कार्यक्रमों के द्वारा कराया जा सकता है। एक दूसरे देश किस प्रकार आपस में आदान प्रदान व सहयोग द्वारा समस्याओं के समाधान हेतु प्रयत्नशील है इसका उन्हें न केवल ज्ञान होगा बल्कि वे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व सद्भाव के महत्व को भी समझेंगे। विदेशी विद्वानों, राजदूतावास से सम्बन्धित व्यक्तियों और संस्थाओं से जुड़े, लोगों के व्याख्यान का आयोजन कर छात्रों को अन्य देशों की परम्पराओं, रीति–रिवाजों, विचार और जीवन की समस्याओं व इनके समाधान के प्रयासों के बारे में ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। इससे उनकी संवेदना और सहानुभूति को उभारा जा सकता है। अन्य देशों के लोगों के लिए कुछ कर सकने की भावना व संकल्प को जागृत किया जा सकता है।

यूनीसेफ, यूनेस्को और यू. एन. ओ. द्वारा अनेक सहायतार्थ कार्यक्रम आरम्भ किए जाते है। उदाहरण के तौर पर विकलांग वर्ष, महिला वर्ष, शिशु वर्ष, साक्षरता वर्ष आदि । इनके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय चेतना और जागृति इन समस्याओं से सम्बन्धित प्रेरित की जाती है, ताकि विश्व समाज इनके निराकरण के लिए सामूहिक प्रयास करे और एक–दूसरे की मदद करते हुए इनका समाधान खोजे। ऐसे अवसरों का उपयोग स्कूलों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास के लिए किया जा सकता है। नाटक, प्रहसन, लोक गीत, लोक नृत्य आदि का प्रदर्शन कर न केवल छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इन समस्याओं का ज्ञान ही दिया जा सकता है बल्कि मंचीय प्रदर्शनी के द्वारा समुदाय के अन्य श्रोताओं व दृष्टाओं को भी अवगत कराया जा सकता है। प्राकृतिक विपदाओं में फंसे लोगों को सहायता प्राप्त कराने के लिए छात्र दान प्राप्त करने का अभियान आराम्भ कर सकते है। भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए, दूर्भिक्ष से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए, रेड क्रास के लिए, मानवीय अधिकारों के लिए लड़ने वालों की सहायता के लिए, नाटक, प्रहसन, विविध

मनोरजंनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन कर प्रवेश शुल्क के माध्यम से धन राशि का संग्रह कर सकते हैं। यह सब क्रिया कलाप उनकी संवदेना और सहानुभूति को देश की सीमा के पार पीड़ित लोगों तक पहुँचाने में सहायक हो सकती है। इससे सम्पूर्ण मानवता के प्रति प्रेम, मंत्र को वे जान सकेंगे।

यू.यून.ओ. और उसकी अनेक विशिष्ठ संस्थाऐं विभिन्न प्रकार का साहित्य और शिक्षण सामग्रियाँ प्रकाशित और प्रसारित करती है। इस साहित्य व शिक्षण सामग्रियों का प्रदाय कर विद्यालय अपने पुस्तकालयों को सजा सकती है। छात्रों को इससे देश विदेशों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जा सकती है। यह साहित्य चित्र–पत्रिकाओं, पोस्टर्स, फिल्म स्ट्रिप, फोटो प्रिन्ट आदि के रूप में उपलब्ध होती हैं। इसमें कला, विज्ञान, शिक्षा आदि से संबन्धित जानकारियों और विभिन्न देशों में इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों का परिचय प्राप्त होता है। स्टूडेन्ट–एक्सचेन्ज जैसी योजनाएं भी प्रचलित है। विभिन्न देशों से हमारे जो राजनयिक संबंध हैं और सांस्कृतिक मंडलों का आदान–प्रदान होता है वह भी अवसर प्रदान करता है जिसमें छात्रों का दल विदेशों का भ्रमण कर सके। पिछले वर्षों में भारत मेला जैसे कार्यक्रम आरम्भ हुए जिसमें भारत की संस्कृति और कला का प्रदर्शन करने अनेक कलाकार अमेरिका, फ्रान्स और रशिया गये। वैसे ही इन देशों से भी सांस्कृतिक मंडल भारत आए। यह अवसर छात्रों को अधिक नजदीक से दूसरे देशों के लोगों को समझने का अवसर प्रदान करता है।

निष्कर्ष (Conclusion)- अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास हेतु शिक्षा द्वारा जो प्रभाव लाये जा रहे हैं, और जो लाए जा सकते है, उनमें बहुत अन्तर है। शैक्षिक संस्थाओं में आयोजित क्रिया–कलापों में अब भी यही कमी है कि वे प्रधानतः राष्ट्रीय और स्थानीय हितों तक ही सीमित रह जाते हैं। इसमें कोई दो मत नही कि राष्ट्रीयता पर ही अन्तर्राष्ट्रीयता आधारित होगी। जब तक छात्रों में राष्ट्र के प्रति प्रेम, त्याग और निष्ठा नहीं जागेगी तब तक वे इन अनुभूतियों को व्यापक परिवेश में फैलाने में असफल होंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षण विधियों में, अध्ययन हेतु दी जाने वाली प्रेरणा में, छात्रों के मूल्यांकन के तरीकों में, परिर्वतन की आवश्यकता है। अध्ययन और अध्यापन की समस्त प्रक्रिया में, समग्र उपागम में, अन्तर्राष्ट्रीयता का दृष्टिकोंण समाहित होना चाहिए।

सन्दर्भ –

अग्रवाल, जे०सी०. (1971).यूनेस्को कन्ट्रीब्यूशन टू वर्ल्ड एजूकेशन. आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली.
बाजपेयी, यू०एस० एण्ड एस० विजवान. (1986). यूनेस्को इन रिट्रास्पेक्ट एण्ड प्रास्पेक्ट. लान्सर इण्टरनेशनल, नई दिल्ली.
शाह माधुरी, (1986). रिसर्च पेपर, यूनेस्को एण्ड एजूकेशन. इन्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली.
लर्निंग टू बी. (1967). यूनेस्को, पेरिस स्टरलिंग, नई दिल्ली
सैयदेन,के०जी०. (1948). एजूकेशन फार इन्टर नेशनल अन्डरस्टेन्डिंग. हिन्द किताब लि०, बम्बई
मिश्रा, ए०एन०. (1971). एजूकेशन एण्ड फाइनेन्स. कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर.

www.research-Chronicler.com ISSN - 2347 - 503X

Editor-In-Chief

Prof. K. N. Shelke

Dhanashree Publications
Flat No. 01, Nirman Sagar Coop. Housing Society, Thana Naka,
Panvel. PIN - 410206. Cell: 07588058508